# श्वेत क्रांति - हकीकत या मिथक

**भारत डोगरा**

हमारे देश में दूध के उत्पादन में वृद्धि को श्वेत क्रांति नाम दिया गया है। फिर भी यह सवाल बना हुआ है कि वास्तव में दूध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, या केवल गांवों से शहरों की ओर दूध की सप्लाई या बिक्री बढ़ गई है।

संतोषजनक उत्तर प्राप्त करने के लिए यह जानना होगा कि दूध उत्पादन में वृद्धि के लिए कौन से उपाय ज़रूरी हैं, और क्या ये उपाय हमारे देश में सफलतापूर्वक अपनाए गए हैं।

किसी देश या क्षेत्र में दूध का उत्पादन तभी बढ़ सकता है जब दुधारू पशुओं के लिए चारे व खली की उपलब्धि बढ़ेगी। सवाल यह है कि क्या हाल के वर्षों में देश के चारागाह बेहतर हुए हैं, वन घने हुए हैं, फसल अवशेष रूपी चारा बढ़ा है या खली का उत्पादन बढ़ा है? इन सभी प्रश्नों के उत्तर नकारात्मक हैं।

लगातार यही समाचार मिल रहे हैं कि चारागाहों की स्थिति बुरी तरह बिगड़ रही है, प्राकृतिक वन कम हो रहे हैं व यूकेलिप्टस जैसे पेड़ों के प्लांटेशन बढ़ाए जा रहे हैं जिनसे चारा नहीं मिलता है। जहां-जहां फसल कटाई कंबाइन हार्वेस्टर से होने लगी है, वहां फसल अवशेष नहीं मिलते हैं। जहां अधिक रसायनों का छिड़काव हो या जीएम फसलें उगाई जा रही हों वहां भी फसल अवशेष या आसपास की घास का चारा विषैला हो रहा है। खली का उत्पादन तभी बढ़ेगा जब तिलहन का उत्पादन बढ़ेगा और तिलहन के उत्पादन में हम पीछे रह गए हैं। दलहन के उत्पादन में पीछे रहने से दलहन के छिलके जैसे चारे में भी काफी कमी आई है।

अर्थात स्पष्ट है कि दुधारू पशुओं के अधिकांश खाद्यों की उपलब्धि में कमी हुई है। तो इस स्थिति में दूध के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि कैसे हो सकती है?

दूध उत्पादन में वृद्धि का एक अन्य उपाय दुधारू पशुओं की नस्ल में सुधार है। भारत सरकार ने नस्ल सुधार के लिए संकरित गाय की तकनीक अपनाई है। पर यह तकनीक भारतीय जलवायु या परिस्थितियों के अनुकूल नहीं है। यहां दूध उत्पादन में वृद्धि के लिए अच्छी देशी नस्लों को बचाना बहुत ज़रूरी है परंतु कड़वी सच्चाई तो यह है कि गाय की उत्तम देशी नस्लों की उपलब्धि दिन ब दिन कम होती जा रही है।

इस तरह दूध का उत्पादन बढ़ाने का आधार चाहे कमज़ोर हो पर शहरी बाज़ार में दूध अधिक नज़र आ रहा है। इसकी एक वजह यह हो सकती है गांवों में दूध, दही, घी व छाछ का उपयोग कम हुआ है जबकि दूध की बिक्री बढ़ी है। दूसरी वजह यह है कि आधुनिक डेयरी उद्योग में ताज़े दूध में दूध पावडर व बटर ऑयल जैसे दूध उत्पादों को मिलाकर विभिन्न वसा श्रेणियों का दूध तैयार होता है। अतः ताज़े दूध की कमी को आयातित बटर ऑयल व दूध पावडर से पूरा किया जा सकता है। इसके अलावा एक और समस्या यह है कि तरह-तरह की मिलावट से दूध की आपूर्ति को बढ़ाया जा रहा है।

दूध की बिक्री निरंतर पॉलीथीन पैकिंग में बढ़ने से इन थैलियों को ठिकाने लगाने की समस्या भी खड़ी हो रही है। यह तो बहुत अजीब लगता है कि कई ग्रामीण क्षेत्रों की दुकानों में भी यही पॉलीथीन की थैलियों में पैक दूध बिकता नज़र आता है।

स्पष्ट है कि कथित श्वेत क्रांति का आधार बहुत कमज़ोर है। जब देश में दूर-दूर तक चारागाहों व वनों की स्थिति सुधरेगी, खली व चारे की उपलब्धि पर्याप्त होगी, अच्छी देशी नस्ल की गायों में वृद्धि होगी तभी दूध उत्पादन का मज़बूत आधार तैयार होगा। ***(स्रोत फीचर्स)***